© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

Shodh International: A Multidisciplinary International Journal (In Hindi)
https://www.eurekajournals.com/shodh.html
ISSN: 2581-3501

गाँधीवाद तथा नमक सत्याग्रह

डॉ के. आर. शशिकलाराव[1]

[1]भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष, ट्रान्सेंडग्रुप ऑफ़ इंस्टिट्यूशन, एलचेनहल्ली, बैंगलोर।

सारांश

नमक सत्याग्रह का भारतीय स्वतंत्रता संग्राह के इतिहास में महत्त्वपूर्ण योगदान है। 1930 ई. में गाँधीजी ने निर्णय किया कि डांडी पहुँचकर वे नमक कानून भंग करके सत्याग्रह शुरू करेंगे॥ यह गाँव साबरमती आश्रम से लगभग 200 मील दूर समुद्र के किनारे अवस्थित है। 12 मार्च, 1930 को साढ़े छः बजे सवेरे 78 स्वयंसेवकों के साथ गांधीजी की ऐतिहासिक यात्रा शुरू हुई॥ ये स्वयंसेवक बिहार सहित विभिन्न प्रान्तों से आए थे। 241 मील दूरी तय करके गांधीजी 5 अप्रील को डांडी पहुँचे॥ 6 अप्रील राष्ट्रीय सप्ताह का पहला दिन था। उस दिन सवेरे ही डांडी समुद्र तट पर अपने अनुयाइयों के साथ पहुँच कर नमक बनाया॥ इस प्रकार भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का प्रथम चरण नमक सत्याग्रह के रूप में शुरू हुआ॥

शब्दकुंजी: नमक सत्याग्रह, स्वाधीनता संग्राम, अवज्ञा आंदोलन, गांधीवाद।

भूमिका

देश को स्वाधीन कराने के लिए सम्पूर्ण भारत वर्ष को गांधीजी की क्षमता पर पूर्ण विश्वास था॥ लाहौर कांग्रेस के आलोक में ही गांधीजी को एक और राष्ट्रीय आन्दोलन शुरू करने की जिम्मेदारी दी गई। गांधीजी ने सोच-विचार कर गुजरात में अहमदाबाद से डांडी तक यात्रा करके नमक कानून को तोड़कर इस आन्दोलन को शुरू क्रने का फैसला किया। गांधीजी की डांडी यात्रा 12 मार्च को शुरू हुई, जिसका अन्त 6 अप्रैल को नमक कानून तोड़कर हुआ और देश एक और आन्दोलन के वेग से उद्वेलित हो उठा।

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

बिहार में 6 अप्रैल, 1930 को नमक सत्याग्रह शुरू करने की तिथि निश्चित की गई। राजेन्द्र बाबू ने आन्दोलन की रूपरेखा तैयार की। उसी के अनुसार सर्वप्रथम चम्पारण एवं सारण में नमक सत्याग्रह की शुरूआत हुई। इसमें लोगों ने उत्साह से भाग लिया। इस दौरान कई नेता गिरफ्तार भी हुए, परन्तु आन्दोलन के रूख में कोई कमी नहीं आई। सारण जिले के बेरजा, गोरिया कोठी एवं हाजीपुर में 6, 7 एवं 8 अप्रैल को नमक सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ। मुजफ्फरपुर में 7 अप्रैल को सत्याग्रह शुरू हुआ। चम्पारण जिले में 15 अप्रैल को कई स्थानों पर नामक कानून भंग हुआ।

पटना मे 16 अप्रैल, 1930 ई. को नमक सत्याग्रह शुरु हुआ। यहाँ नरवासपिंड नामक स्थान को नमक कानून भंग करने के लिए चुना गया। यहाँ अम्बिका कान्त सिंह जो कि उस समय सर्चलाइट के मैनेजर एवं नगर कांग्रेस कमेटी के सचिव थे वे नेतृत्व में सत्याग्रहियों का जत्था निर्धारित स्थल की तरफ चला, जिसे महेन्द्रू मुहल्ले के पास रोक दिया गया एवं बहुत से लोग गिरफ्तार कर लिए गए। रामवृक्ष बेनीपुरी भी इस दौरान गिरफ्तार किए गए। पटना में 16 अप्रैल को अभूतपूर्व नजारा था। बिहार में सत्याग्रह की प्रगति देखने हेतु राजेन्द्र प्रसाद बाबू यात्रा पर थे। 16 अप्रैल को वे छपरा में थे। जब उन्हें पटना की खबर मिली, तो आधी रात में पटना पहुँचे। जिलाधिकारी एवं एस.पी. से वार्ता होने के बावजूद स्थिति ज्यादा नहीं संभली। प्रदर्शनों पर पुलिस अत्याचर जारी रहा। इस दौरान अब्दुल बारी, आचार्य कृपलानी एवं श्री राजेन्द्र प्रसाद को भी पीटा गया। 13 अप्रैल को एक जत्थे ने श्री जगतनारायण लाल के नेतृत्व में बिहटा के समीप अमहरा गाँव में नमक बनाया। स्वामी सहजानन्द ने भी इसमें योगदान दिया।

दरभंगा में श्री सत्यनारयण सिंह के नेतृत्व में, मुंगेर में श्री कृष्ण सिंह के नेतृत्व में, मानभूम, शाहाबाद आदि इलाकों में अन्य नेताओं के नेतृत्व में यह आन्दोलन जोर-शोर से चला। साथ ही सरकारी दमन चक्र भी जारी रहा। इस दौरान 13000 से अधिक कार्यकर्ता एवं नेता गिरफ्तार हुए। प्रेस पर प्रहार करते हुए 'सर्चालाइट', 'देश', 'महावीर' एवं 'लोक संग्रह' की जमानत की रकम भी जब्त कर लिया गया एवं प्रकाशन भी रोक दिया गया।

इसी बीच गाँधीजी 4 मई, 1930 ई. को गिरफ्तार कर लिए गए। देश के अन्य भागों की तरह बिहार में भी गिरफ्तारी के विरोध में प्रदर्शन हुए, हड़तालें हुई एवं सभाओं का आयोजन हुआ। इस समय कुछ पुलिस के सदस्यों ने भी त्यागपत्र दे दिए।

सविनय अवज्ञा के अन्य कार्यक्रम यथा-विलायती वस्त्र का बहिष्कार, खादी का उत्पादन एवं व्यवहार, नशीले पदार्थों का बहिष्कार जनता के सक्रिय सहयोग से लागू किया गया। इस उद्देश्य से मई 1930 में पटना में एक स्वदेशी संघ की स्थापना हुई, जिसके अध्यक्ष सर अली ईमाम

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

बनाए गए। इस आन्दोलन के प्रभाव में छपरा जेल के कैदियों ने अनोखा विरोध जताया। उन्होंने स्वदेशी वस्त्र की मांग की एवं नहीं मिलने पर नंगा रहने का निर्णय किया। इसे 'नंगी हड़ताल' के नाम से जाना गया। अन्त में सरकार को कैदियों की मांग के समक्ष झुकना पड़ा।"

जनता और ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के बीच विरोध इतना उग्र होता जा रहा था कि बिहार के युवा अब चैन से बैठ नहीं सकते थे। गांधीजी का नेतृत्व बना रहे, इसके लिए उन्हें अहिंसक तरीके से प्रयास करना था। बिहार के नौजवान किसी भी स्थिति में राजसत्ता को उखाड़ फेंकने के लिए व्याकुल थे। लेकिन वास्तविकता यह थी कि जनता के उग्र रूप धारण किए बिना यह सरल कार्य नहीं था। लेकिन गांधीजी का विश्वास था कि अहिंसक आंदोलन ही आंदोलनकारियों को शक्तिशाली बनायेगा।

ब्रिटिश सरकार की शोषणकारी नीतियों के कारण भारत के कृषकों की हालत दयनीय हो चुकी थी। ब्रिटिश साम्राज्य द्वारा पोषित जमींदारों और उनके गुमास्तों ने इन किसानों के खून को चूसने में कोई कसर नहीं छोड़ी। बागान मालिकों ने इस तरह की परिस्थितियाँ पैदा कर दी, जिनमें किसी भी रैयत के लिए जीना मुश्किल हो गया। जब-तब इन किसानों ने अपने शोषणों के खिलाफ आवाज उठाई, लेकिन उन्हें तत्काल दबा दिया गया। इसका कारण यह था कि कृषकों के बीच एकता और संगठन का अभाव था, बीसवीं सदी में बिहार के कुच नेताओं ने इस समस्या पर गंभीरतापूर्वक विचार किया और किसानों को संगठित करने पर बल दिया। इस दिशा में पहला प्रयास 1922-23 ई. में मुंगेर में शाह मुहम्मद जुबैर और श्री कृष्ण सिंह के द्वारा किया गया। उन्होंने एक किसान सभा की स्थापना की। शाह मुहम्मद जुबैर इसके अध्यक्ष एवं श्री कृष्ण सिंह उपाध्याक्ष बने। सिद्धेश्वर चौधरी और नन्द कुमार सिंह इसके सचिव बनाये गये।

आन्दोलन को सशक्त होता देख और उसमें युवाओं की बढ़ती संख्या को ध्यान में रखते हुए गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। यहाँ से सविनय अवज्ञा आंदोलन ने तेजी पकड़ना आरंभ किया। बिहार में आर्थिक स्थिति से जूझ रहे लोगों पर सरकार ने अत्याचार करने का जैसे कोई बहाना खोज लिया था। अब सरकार की नई योजना व रणनीति का हिस्सा नमक पर तिगुना कर लगा देना था। नमक कर तिगुना करने के साथ-साथ सरकार ने किसी भी व्यक्ति के निजी तौर पर नमक बनाने पर प्रतिबंध लगा दिया था और घोषणा करवा दी थी कि आदेश न मानने वाले को कठोर दंड दिया जाएगा। लेकिन गांधीजी मानो चुनौतियों का सामना करने के लिए ही बने थे। उन्होंने सबसे पहले सरकारी आदेश की अवहेलना करते हुए दांडी पहुँचकर नमक बनाया और सरकारी कानून को पूरी तरह भंग कर दिया। गांधीजी के इस कदम का अनुसरण करते हुए देश

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

के सैकड़ों युवा आंदोलनकारियों ने समुद्र के पानी से देश के विभिन्न हिस्सों में नमक बनाना आरंभ कर दिया। इस आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें पूरी तरह शराबबंदी और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार को वरीयता दी गई थी। शराबबंदी के विरोध में देश की महिलाएँ बड़े पैमाने पर धरना प्रदर्शन कर रहीं थीं। सविनय अवज्ञा आंदोलन अलग-अलग प्रान्तों में हिंसक रूप धारण करने लगा। अप्रैल के महीने में जन आंदोलन का सैलाब आ गया। सविनय अवज्ञा आंदोलन अब गांधीवादियों तक ही सीमित नहीं रह गया था। छात्र स्कूल-कॉलेज छोड़कर आंदोलन में कूद पड़े तथा नौजवानों ने सरकारी नौकरियों से त्यागपत्र दे दिया। छात्रों और नौजवानों ने आम जनता के साथ मिलकर भारत को स्वाधीन कराने और समानांतर प्रशासन स्थापित करने का रास्ता अपनाया।साथ ही लगानबंदी आंदोलन ने जोर पकड़ना आरंभ किया। इस संदर्भ में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 1928 में लगानबंदी आंदोलन को गुजरात में सूरत जिले के बारदोली नामक स्थान पर पूरे वर्चस्व के साथ चलाया था।

इस आंदोलन को उन्होंने गुजरात के जन-जन तक पहुँचाने का सफल कार्य किया। उन्हें बारदोली आंदोलन के दौरान इतनी प्रसिद्धि प्राप्त हुई कि वे समस्त भारत के 'सरदार' कहलाने लगे थे। बंबई और मध्य प्रान्त में वन सम्बन्धी कानूनों का संपूर्ण भारत में उल्लंघन किया गया। संयुक्त प्रान्त, पश्चिमी बंगाल, बिहार तथा कर्नाटक में लगानबंदी आंदोलन ने खूब ज़ोर पकड़ा। गांधीजी और उनके युवा कार्यकर्ताओं की माँग पर किसानों ने सरकार तथा ज़मीदारों को लगान देना बन्द कर दिया।

भारत की सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति दिन-प्रतिदिन बिगड़ती जा रही थी। ग्राम प्रमुखों ने बड़े पैमाने पर इस्तीफा देना आरंभ कर दिया था। भारतीय सैनिकों ने अपने देश के नौजवानों पर गोली चलाने से इंकार करना आरंभा कर दिया था। देश के युवाओं ने हाथ से बने खद्दर के कपड़े पहनने को वरीयता दी, जिससे सम्पूर्ण भारत में खद्दर कपड़ों की माँग बढ़ने लगी।

गांधीजी के मार्ग का अनुसरण करते हुए युवा आंदोलनकारियों ने अहिंसक तरीके से आंदोलन को आगे बढ़ाया। भारत के युवा आंदोलनकारी धरना देते और भाषणों के माध्यम से सविनय अवज्ञा आंदोलन को मजबूती प्रदान करते थे। आंदोलन को दबाने के लिए अंग्रेजी सरकार भारत के छात्र व नौजवान आंदोलनकारियों पर गोलियाँ चलाती और उन पर लाठी डंडों की बरसात करती। विदेशी पत्रकारों ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग ले रहे लोगों के आदर्श, व्यवहार और साहस की अत्यधिक सराहना की। इसके साथ ही पत्रकारों ने अंग्रेजी शासन और उनकी

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

दमनकारी नीतियों की जोरदार शब्दों में आलोचना की। उनकी रिपोर्ट विदेशी अखबारों में छपती थी, जो कि अप्रत्यक्ष रूप से भारत के आंदोलनकारियों के लिए विश्व स्तर पर जनमत तैयार करने का कार्य करती थी।

इस संदर्भ में बंगाल में भी आंदोलनकारी गतिविधियाँ देखने को मिलीं। 1930 में सशस्त्र संग्राम के द्वारा देश को स्वाधीन कराने का रास्ता चटगांव के युवा आंदोलनकारियों ने दिखाया। बंगाल के इन आंदोलनकारियों की विशेषता थी कि वे जनता के बीच में रहकर कार्य करते थे। चटगांव में युवा आंदोलन का दायित्व 'चटगांव रिपब्लिकन आर्मी' पर था। चटगांव और उसके आस-पास के गांवों में युवा आंदोलनकारियों की बैठक होती थी। उन्होंने बमों, विस्फोटकों के साथ-साथ अन्य गैर कानूनी छापाखाना भी खोल रखा था। इस संगठन का नेतृत्व युवा आंदोलनकारी सूर्यसेन कर रहे थे, जिन्हें लोग 'मास्टर दा' के नाम से अधिक जानते थे।

सूर्यसेन ने अपने युवा साथियों के साथ 18 अप्रैल, 1930 को रात के दस बजे फौजी वर्दी में हथियारों के साथ चटगांव के शस्त्रागार पर पूरी शक्ति से हमला बोल दिया। उन्होंने एक अंग्रेज़ी अफसर की हत्या भी कर दी और उनके सभी हथियारों पर कब्ज़ा कर लिया। आंदोलनकारियों ने चटगांव शहर का सम्बन्ध देश का अन्य भागों से पूरी तरह काट दिया और पुलिस बैरक पर भी अपना कब्ज़ा कर लिया था। इसके बाद आर्मी के सदस्यों ने 'वंदेमातरम्' का गाना गाते हुए चटगांव की मुक्ति की घोषणा की। इन्होंने चटगांव के सभी थानों और सरकारी दफ्तरों पर अपना कब्ज़ा कर लिया था, उन्होंने सड़कों पर नाकाबंदी कर दी थी और रेल की पटरियों को जमीन से उखाड़ फेंका था। युवा देशभक्त अपना सबकुछ न्यौछावर करने पर तुले हुए थे। चटगांव के आंदोलनकारियों ने पूरे शहर पर कई दिनों तक कब्ज़ा बनाए रखा, लेकिन उन्होंने शहर के बंदरगाह की ओर अपना ध्यान नहीं दिया। जिला कमिश्नर आंदोलनकारियों की गोली से बचकर भाग निकला था। उसने बंदरगाह में जाकर कलकत्ता तार भेजा। बंदरगाह पर तैनात गोरे सैनिकों ने आंदोलनकारियों पर हमला बोला, लेकिन सभी मार दिए गए। शीघ्र ही सरहदी सेना राइफल ब्रिगेड और मशीनगन प्लेटून के साथ चटगांव में घुस आयी। शहर की स्थिति को ध्यान में रखते हुए आंदोलनकारियों ने शस्त्रागार में आग लगा दी और सूर्यसेन व अंबिका चक्रवर्ती के नेतृत्व में जलालाबाद चले गये।

ब्रिटिश सरकार ने सैनिकों की मदद से 23 अप्रैल, 1930 को जलालाबाद की पहाड़ियों का घेराव कर दिया। चटगांव में 'मार्शल लॉ' लगा दिया गया और तेजी से गिरफ्तारियाँ आरंभ की गयीं। शहर से राशन पानी और खान-पान की अन्य सामग्री मिलना आंदोलनकारियों को कठिन हो

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

गया। सभी युवा आंदोलनकारियों के मारे जाने की आशंका नज़र आने लगी थी। सूर्यसेन व अंबिका चक्रवर्ती के नेतृत्व में सभी आंदोलनकारी आस-पास के गांवों में फैल गए। ब्रिटिश शासकों ने चटगांव के सूर्यसेन, अंबिका चक्रवर्ती व अन्य 30 युवा आंदोलनकारियों पर देशद्रोह का मुकदमा चलाया। उन सभी आंदोलनकारियों पर सरकार की सत्ता को नुकसान पहुँचाने का आरोप लगाया गया। मुकदमे की कार्यवाही पूरी की गई और सूर्यसेन को फाँसी पर चढ़ा दिया गया और उनके अन्य युवा सहयोगियों जिसमें अंबिका चक्रवर्ती, अनंत सिंह, गणेश घोष, व लोकनाथ बल आदि थे, को काले पानी की लंबी और भयंकर सज़ा सुनाई गई।

नमक सत्याग्रह आंदोलन के इसी क्रम में 23 अप्रैल, 1930 को पेशावर के पठानों ने अहिंसक लड़ाई का बढ़िया उदाहरण प्रस्तुत किया। सैकड़ों कि संख्या में इन निहत्थे पठानों ने ब्रिटिश फौज की बंदूकों और तोपों का सामना किया। अंग्रेजों ने उन्हें निर्ममता से भून डाला। इस घटना में 30 आदमी मारे गए और अनेक घायल हुए। अंग्रेज़ों की चर्चित नीति 'फूट डालो और राज करो' का भी प्रतिपादन सविनय अवज्ञा आंदोलन के अवसर पर देखने को मिला। उन्होंने युवा-शक्ति को कमज़ोर करने के उद्देश्य से पेशावर के पठानों को गोलियों से भून डाला था।

इसी का एक अन्य उदाहरण सीमा प्रान्त के वो प्रदेश हैं, जहाँ अधिकांश मुस्लिम रहते थे। अंग्रेजों ने हिन्दू-मुस्लिम भेदभाव को बढ़ाने के उद्देश्य से मुस्लिम आंदोलनकारियों की हत्या करने के लिए हिन्दू सैनिकों (18वीं रॉयल गढ़वाली राइफल्स की दो पलटनें) को अप्रैल, 1930 में वहाँ भेजा। इन नौजवान सैनिकों ने अपने अधिकारियों के आदेश पर पठानों पर गोली चलाने से स्पष्ट इंकार कर दिया। उनके सामने गांधीजी के आदर्श थे और देश की स्वाधीनता की खातिर मर-मिटने वाले युवा आंदोलनकारी। इतना ही नहीं अंग्रेजी फैज में तैनात सभी नौजवान सैनिक आंदोलनकारियों के साथ जा मिले और अपनी राइफलें उनको सौंप दीं। इस आंदोलन के दौरान देश प्रेम और हिन्दू-मुस्लिम एकता का इससे बढ़िया उदाहरण कहीं देखने को नहीं मिलता।

निष्कर्ष

नमक सत्याग्रह की विशेषता यह थी कि अंग्रेज़ी सेना में तैनात भारतीय सिपाहियों ने लगभग भारत के सभी आंदोलनकारी क्षेत्रों में क्रांतिकारियों का साथ दिया था और उन पर गोली चलाने से स्पष्ट इंकार कर दिया था। सरकार का उन पर से भरोसा उठ गया था। नमक सत्याग्रह में क्रांतिकारियों ने केवल पटना, मुजफ्फरपुर में ही नहीं बल्कि देश के अन्य भागों में भी हिस्सा लिया। गांधीजी की गिरफ्तारी 6 मई, 1930 को हुई। भारत के क्रांतिकारियों ने अगले दिन इसके विरोध में राष्ट्रीय स्तर पर धरना प्रदर्शन किए, हड़तालें हुईं तथा स्कूल कॉलेजों व सरकारी

© Eureka Journals 2022. All Rights Reserved. International Peer Reviewed Referred Journal

संस्थानों का पूरी तरह बहिष्कार किया गया। इस विरोध प्रदर्शन में अधिकांश युवा-शक्ति शामिल थी। बंबई की हड़ताल में नौजवान मजदूरों की महत्त्वपूर्ण भूमिका के संदर्भ में कांग्रेस के इतिहास में लिखा हैः "भारत की नौजवान शक्ति ने 80 में से लगभग 40 अंग्रेजी सरकार की मिलों को निष्क्रिय कर दिया। आंदोलन के दृष्टिकोण से युवाओं म्की यह अत्यधिक विशाल और सराहनीय सफलता थी। भारत का लगभग 50,000 युवा-वर्ग गांधीजी की गिरफ्तारी के विरोध में सड़कों पर निकल आया था।

संदर्भ

1. पाण्डे. डॉ. अम्बा दत्त: भारतीय स्वाधीनता आंदोलन, आधुनिक प्रकाशन, दिल्ली, 1995, पृ. 113-114
2. भारती, जय प्रकाश: स्वतंत्रता-संग्राम, युवाओं का युद्धघोष 'वन्दे मातरम्', पृ. 44-45.
3. सीतारमैय्या, पट्टाभि: हिस्ट्री ऑफ इंडियन नेशनल कांग्रेस, भाग-4, अध्याय-1, पृ. 635.
4. पाण्डे, डॉ. अम्बा दत्त: पूर्वोक्त, पृ. 113-114.
5. दत्त, रजनी पाम: इंडिया टूडे, मनीषा प्रकाशन, कलकत्ता, 1970 पृ. 367.
6. पाण्डे, डॉ. अम्बा दत्त: पूर्वोक्त, पृ. 113-114.
7. राय, सुबोध: कम्युनिज़्म इन इंडिया, अनपब्लिश्ड डाक्यूमेंट्स, 1925-1934, पृ. 184.
8. पाण्डे, डॉ. अम्बा दत्त: भारतीय स्वाधीनता आंदोलन, पृ 113-114.
9. भारती, जय प्रकाश: स्वतंत्रता-संग्राम, युवाओं का युद्धघोष 'वन्दे मातरम्', पृ. 45-46.
10. दत्त, कलप्ना: चिटागांग आरमरी रेड, रेमिनिसेंसेज, बंबई, 1945, पृ. 21-30.